सुरक्षा प्राचीर

गया था, जिसमें प्राचीनतम निर्माण पाँचवीं शती ईसा पूर्व का है।

श्येनचिति

उत्खनन में रक्षा-प्राचीर के पूर्वी द्वार के बाहर गरूड़ पक्षी की आकृति का एक यज्ञ कुण्ड प्राप्त हुआ है जिसका मुख दक्षिण-पूर्व दिशा में है। पक्षी का सिर, धड़, पंख एवं पूंछ एक विशेष रूप से निर्मित धरातल पर ईंटों द्वारा निर्मित किया गया है। वर्तमान में पक्षी का बायाँ पंख, सर, धड़ का कुछ भाग ही शेष है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार इस प्रकार के यज्ञ कुण्ड का निर्माण मानव बलि (पुरुष-मेध) के लिए किया जाता था। उत्खनन से प्राप्त मित्र राजवंश की मुद्रानिधि के आधार पर प्रतीत होता है कि यह यज्ञ मित्र राजवंश के शासक द्वारा किया जाता रहा होगा।

एकाश्मक स्तम्भ

अशोक स्तम्भ के समीप का क्षेत्र मुख्यतः आवासीय स्थल प्रतीत होता है। यहां दो एकाश्मक स्तम्भ थे जिन्हें मौर्य सम्राट अशोक द्वारा लगवाया गया था। मौर्य सम्राट अशोक ने अपने स्तम्भ अभिलेख में भिक्षुओं को धम्म के प्रति नियम पालन की एवं संघ में भेद न करने की चेतावनी भी दी है। यहाँ स्थित एकाश्मक स्तम्भ पर गुप्तकाल से वर्तमान समय तक के कुछ लघु अभिलेख भी उत्कीर्ण हैं, जिनमें शंख लिपि में लिखित कुछ लघु अभिलेख प्रमुख हैं। इस स्थल से चौथी शती ई.पू. के मध्य से चौथी शती ई.तक के लगातार निवास के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

भ्रमण का समय

स्मारक प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक खुला रहता है।

प्रवेश निःशुल्क

संपादक : डा. एन. के. सिन्हा
पाठ संकलन : श्री अब्दुल आरिफ
श्री अनिल कुमार सिंह
छायाचित्र : श्री ओ. पी. पाण्डेय
मानचित्र : श्री राम नरेश यादव

© भा॰पु॰सर्वे॰, २०१८

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
सारनाथ मंडल, सारनाथ, वाराणसी,
उ० प्र०, २२१००७
फोन नं० ०५४२-२५९५००७, २५९५२०७
Email : circlesar.asi@gmail.com
Website : www.asisarnathcircle.org

सत्यमेव जयते
प्रत्नकीर्तिमपावृणु

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

कौशाम्बी

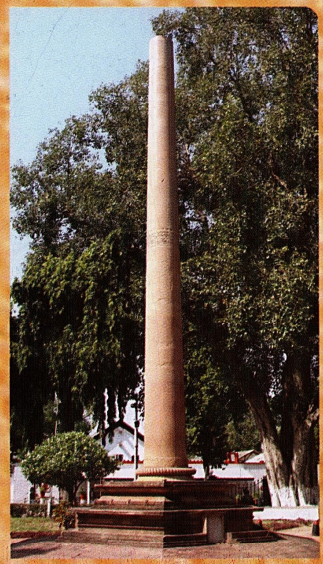

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
सारनाथ मण्डल, सारनाथ
वाराणसी, उ० प्र०

कौशाम्बी (अक्षांश २५° २०' उ०, देशांतर ८१° २३' पूर्व) ४ अप्रैल १९९७ को इलाहाबाद जिले को विभाजित कर उत्तर प्रदेश का नया जिला बनाया गया। यह इलाहाबाद शहर से ५५ कि०मी० दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थित है। छठी सदी ई० पू० कौशाम्बी वत्स महाजनपद की राजधानी थी। पुराणों के अनुसार निचक्षु जो परीक्षित की छठी पीढ़ी के वंशज थे, ने बाढ़ से हस्तिनापुर के तबाह होने के बाद कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाई थी। बुद्धघोष के अनुसार कौशाम्बी शहर की स्थापना के दौरान अत्यधिक संख्या में कौशाम्बा (कदंब) के वृक्ष उखाड़े जाने के कारण इसका नाम कौशाम्बी पड़ा। जैन ग्रंथ विविध तीर्थ-कल्प के अनुसार यह स्थान कौशाम्बा (कदंब) के वृक्षों से चारो ओर घिरा हुआ था। बुद्ध काल में कौशाम्बी भारत के छः सबसे महत्वपूर्ण और समृद्ध शहरों में से एक था। इस नगर की महत्ता इसके प्राचीन भारत के पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग पर अविस्थत होने के कारण थी। छठी शताब्दी ई० पू० में उदयन के शासन काल में धर्म के प्रसार के लिए गौतम बुद्ध ने कई बार कौशाम्बी की यात्रा की थी। बौद्ध धर्म को इस शहर के तीन साहूकारो १. घोषित, २. कुक्कुट एवं ३. पवारिक के प्रयासो से एक मजबूत आधार मिला, जिससे बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ। बाद में वत्स को अंवति राज्य द्वारा कब्जा कर लिया गया और मणिप्रभा ने कौशाम्बी में अवंति के राजकुमार के रुप में शासन किया। अशोक ने कौशाम्बी को महत्व देते हुए वहां एक प्रस्तर स्तंभ स्थापित कर उस पर अभिलेख भी उत्कीर्ण करवाया।

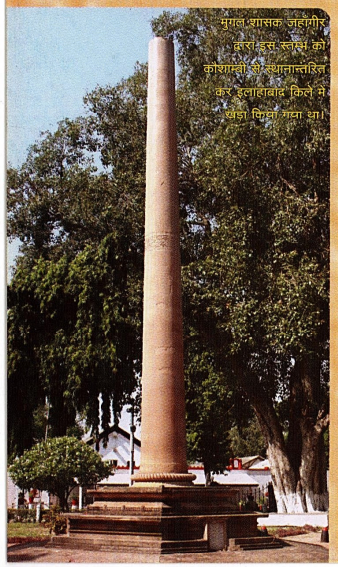
मुगल शासक जहांगीर द्वारा इस स्तम्भ को कौशाम्बी से स्थानान्तरित कर इलाहाबाद किले में खड़ा किया गया था।

चीनी तीर्थयात्री फाह्यान एवं ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में वर्णन किया है कि यह जगह मुख्यतः हीनयान संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा बसाया गया था। ह्वेनसांग के यात्रा के दौरान यह स्थल जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। जैन संप्रदाय के लिए भी कौशाम्बी बहुत पवित्र स्थल है, क्योंकि छठे जैन तीर्थकांर पद्म प्रभु की यह जन्म स्थली है। मौर्य एवं गुप्त काल के समय कौशाम्बी एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई थी।

पुरातात्विक स्थल कौशाम्बी के अवशेष यमुना नदी के बांए किनारे पर स्थित है। इस प्राचीन शहर के अवशेष टीलों के रुप में दूर से दिखाई देते है। यह टीलें के लगभग ६.५० कि०मी० की परिधि में फैले हुए है। इस प्राचीन शहर की किलाबंदी आस-पास के क्षेत्र से ९-१० मी० ऊँची थी। इस शहर की योजना अनियमित आयताकार के रुप में हैं, जो तीन ओर से खाई से घिरा था। शहर के चारों दिशाओं में द्वार एवं उपद्वार बनाए गए थे। इस स्थल पर विभिन्न चरणों में कराए गये पुरातात्विक उत्खननों से यहाँ १७ मीटर मोटे सांस्कृतिक विन्यास के अवशेष प्राप्त हुए है जिनका विवरण इस प्रकार हैः-

कौशाम्बी के उत्खनित अवशेष

यहाँ के भग्नावशेषों को सर्वप्रथम ए. कनिंघम द्वारा प्राचीन कौशाम्बी के रूप में पहचाना गया था। यहाँ के ध्वंसावशेष एक प्रभावशाली सुरक्षा प्राचीर से घिरे हैं, जिनकी औसतन ऊँचाई १०.६ मी. है। सुरक्षा प्राचीर से जुड़ी बुर्जियाँ २१.३ से २२.९ मी. ऊँची चतुर्भुजाकार है जिसकी परिधि ६.४ मी. का हैं। इसके पाँच मुख्य द्वार थे तथा छः छोटे पूरक उप द्वार थे। इन प्रवेश द्वारों के समीप छोटे कक्षों के अवशेष भी प्राप्त हुए है, जो संभवतः सुरक्षा प्रहरीयों के लिये बनाये गये थे। यहाँ भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा १९३६-३७ में उत्खनन किया गया था। तदुपरान्त इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने १९४९-५० से १९६६-६७ तक यहाँ पर उत्खनन किया जिसके परिणामस्वरूप अनेक पुरातात्त्विक अवशेष प्रकाश में आये। इन पुरावशेषों की प्राचीनता प्रथम सहस्राब्दी ई.पू. तक मानी जा सकती है।

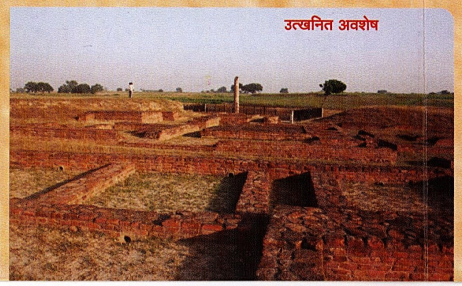
उत्खनित अवशेष

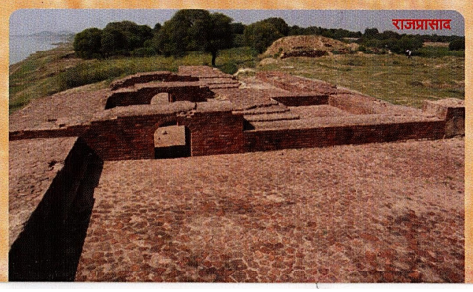
राजप्रासाद

राजप्रासाद

इसके अवशेष प्राचीर से घिरी क्षेत्र के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर स्थित हैं, जिसका क्षेत्रफल ३१५X१५० मी. है। यह प्रासाद कच्ची ईटों से निर्मित २.५ मी. ऊंचे एक चबूतरे पर स्थित है। इसका निर्माण तीन चरणों में हुआ था, जिसमें ईंटो और प्रस्तरो का प्रयोग किया गया था। इसका प्राचीनतम स्तर आठवीं शती ईसा पूर्व का है, जबकि द्वितीय चरण भली भाँति कटे हुए प्रस्तरों से निर्मित है। इसके तृतीय चरण में भयंकर अग्नि से नष्ट भग्नावशेषों के प्रमाण हैं। इस परिसर में एक बड़ा कक्ष है, जिसके दोनों तरफ छोटे कक्ष एवं केन्द्र में निर्मित मीनार की ओर जाती हुई सीढ़ियाँ स्थित हैं। अन्तिम चरण में इस परिसर में तीन भवन संकुल एवं दो गलियारे सहित एक सभागार एवं एक दूसरे से जुड़े कक्ष भी निर्मित किये गये थे।

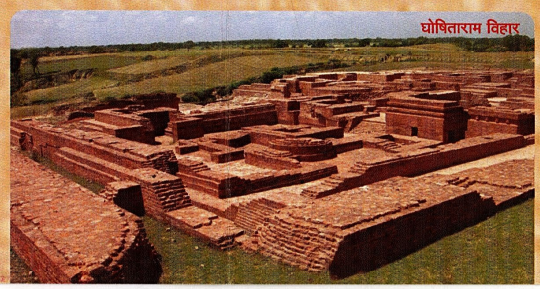
घोषिताराम विहार

घोषिताराम विहार

यहाँ उत्खनन से प्राप्त मुद्रा पर उत्कीर्ण अभिलेख "कौशाम्ब्याम् घोषिताराम विहारे भिक्षु शिलाकारापिता" से इस स्थान की पहचान घोषिताराम विहार के रूप में की गयी है। घोषित नामक एक व्यक्ति कौशाम्बी का एक प्रतिष्ठित व्यापारी था, जिसने भगवान बुद्ध को सम्मान देने के लिए कौशाम्बी आमन्त्रित किया था। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार भगवान बुद्ध बोधि प्राप्ति के छठे तथा नवें वर्ष में कौशाम्बी आये थे। इस विहार में भिक्षुओं के लिए बरामदा युक्त कक्ष तथा मध्य में एक बड़े स्तूप एवं लघु स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। पुरातात्विक उत्खनन के फलस्वरूप यह सिद्ध होता है कि इस विहार का निर्माण सोलह विभिन्न चरणों में किया

मौर्यकालीन एकाश्मक स्तम्भ